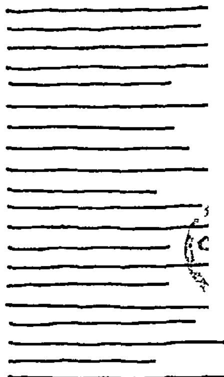
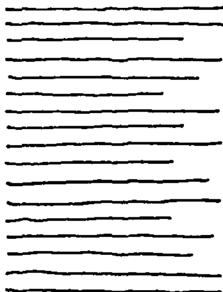
काजल प्रकाशन, बीकानेर



दुःख रंगते हैं मन को



नवल बीकानेरी

_ नवल बीकानेरी

संस्करण 1991

मूल्य सत्तर रुपये मात्र

आवरण अमित भारती

प्रकाशक कागद प्रकाशन
नवीन कुटीर रानी बाजार बीकानेर-334 001

मुद्रक सांखला प्रिन्टर्स सुगन निवास
चन्दन सागर बीकानेर

Dukh Rangte Hain Man ko (Poetry)
by Naval Bikaneri Rs 70 00



प्रात स्मरणीय पूज्य वावूजी की
पुण्य स्मृति मे

पुरातन सस्कृति की गोद मे
सस्कार
आज भी कर रहा है
मेरे वाग के माली को
शत शत नमस्कार
जवकि मेरा वापू चला गया है
मायावी जाल से दूर, वहुत दूर
मैं वावा का हूँ
वावा मेरे है
वावूजी
मेरे 'दु स रगते है मन को' का
पहला पृष्ठ है,
नवीन अर्थ है,
नव दर्शन है ।

अनुक्रम

रग

रगा हुआ मन

दुःख

अनुभूति के अनुपात का अनुमान है कविता,
हृदय-स्पर्शी भावार्थ का वरदान है कविता
कविता के रस रसायन को लहूलुहान न कर,
यह तो जीवन संघर्ष की पहचान है कविता ।

नवल बीकानेरी

चिन्तन और आंसू

आंख का आंसू
कोरे कागज की
बिंदिया बनकर
ऐसे चिपका है
मेरे चिन्तन से
जैसे कोई बन्दरिया
अपने बच्चे से।

रामायण और महाभारत

मानव का भीतरी भाग
रामायण
और बाहरी भाग
महाभारत।

एक ईमानदार जिन्दगी

फेरियाँ
लगाती-लगाती
जा रही है
एक ईमानदार जिन्दगी
एक फरिश्ते से यह कहने कि
दुनिया बनाने वाले से पूछ
तेरी भूल क्या है ?

पानी और पानी

आँख से
उतरा हुआ
कोई मोती
जा रहा है
गंगोत्री
एक ठोस इरादा लेकर
यह पूछने कि—
तेरे पानी में
और मेरे पानी में
फर्क क्या है ?

पानी के फूल

ये आसू नहीं
पानी के फूल है
ऐ खुदा !
मुझे भी लगाने दे
तेरे घर मे फुलवारी ।

एकता

एकता को बांधलो
मन के सूत्र से
और धरातल पर
खड़े होने दो
इंसानियत के पेड़ों को
ताकि फिर कोई महात्मा बुद्ध
आकर बैठ सके ।

एक है सब कुछ

एक गरीब का घर
एक अमीर की कोठी
एक ही खुदा और
एक ही रोटी।

एक नेक इरादा

आज चाँद
बादलों में छुपा है
हम मत डालेंगे।

प्यार है एक जैसा

माँ तेरा प्यार
सबके लिए एक्सा है
पर तेरे बच्चो मे
एकता नही है।

सोच की गहराई

चिड़िया की चोंच में दाना
और दाने में बच्चा
जो छोटा न कर
ऐसी होती है
माँ की ममता।

जिस्म के तवे पर

वह आटे को गूंथकर
जिस्म के तवे पर
रोटी सेंक रही है
और परमार्थ युक्त साधन जुटाकर
परिमार्जित कर रही है
अपनी कला,
अपने साधन
व अपना दर्पण।

कैलेण्डर

रोटिया को बनाकर
आज कैलेण्डर
कोई भूख समेट रहा है
अपने अन्दर।

चीख

दर्द की चीख से
उपजा हुआ समाज
अब जख्म खोलकर
दे रहा है आवाज।

अजीबो गरीब

स्वप्न था
अजीबो गरीब
एक दिन बन गया
मैं कबूतर
तो कबूतर-बाज ने
मुझे पकड लिया
पंख काटे,
दाना खिलाया
व पाला बडे प्यार से
स्वप्न टूटा
तो फिर पाया अपने आपको
महंगे भावो मे,
जख्म और घावो मे ।

समझ का आईना

मेरे सासो से कटी
एक सोधी लकीर
कोरे कागज पर
दर्शान लगी है
पीडा।

कागज की मचली

आस्था, विश्वास,
चेतना और कल्पना
के पायो पे खडी
कागज की 'मचली'
एक सच्चा सबूत
पेश कर रही है
जज साहब!
उनके घर से
दद मिला है
वह दद बटोर रही है।

आइठानो के निशान

हाथो मे उभरे हुए
कुछ आइठानो के निशान
चुभे हुए काटो की,
पकी हुई फुलियो मे
नजर आते है
तो भी मेहनताना वहुत कम है
'मजदूर वग का'
क्योकि गोलाकार का आकार
छोटा और
बहुत छोटा ह ।

दर्द की गठरी

इस गठरी को
खोलो मत
अचम्भा करोगे
खाली शीशियां हैं,
फटे हुए कागज हैं
और रंग बिरंग
कपड़ों की लीरियां हैं
खोल ही ली है
तो समझो
दर्द का मतलब।

काले खून की सज़ा

कटोरो से ढलकने वाले
दो आसू भी
जहर पी सके
इसलिए मैंने
कलम से स्याही छिटकादी
काले खून की सज़ा देकर।

परिक्रमा

आँखों का पानी
पानीदार महल बनाकर
वेदना से जमी
एक लम्बी यात्रा की
'परिक्रमा'
पूरी करने लगा है
इसलिए कि कोई 'मुक्तिबोध'
बोध कराये
संवेदन-शील हृदय का।

पतझड

पतझड को देखकर
मेरा चिन्तन रोया झर-झर
कडकी क्यो नही बिजली ?
बरसा क्यो नही बादल ?

सच्चाई

बादल की एक बूंद
और आंख का एक आंसू
इस बात को जानता है कि
शून्य सच की परिभाषा है।

जीवन है एक सफर

धूप ने सिखाया है
छायादार वृक्ष के नीचे बैठना
इसलिए कि
जीवन एक लम्बा सफर है।

कर्म के फूलों की खुशबू

झरनो से
नदियो तक जाकर मैं
लौट आया
फिर चौडे मैदानो म
मेहनत-कश इसानो मे
ताकि ले सकूँ
कर्म के फूलों की खुशबू।

नयी उम्मीद के नये सपने

ओ प्रात काल की 'रश्मि'
मुझे उस राह पर बैठा दे,
जहा भारतीय दशन है
और भारतीय परम्परा है।

दर्द का सगीत

रेत के घर मे
बीज बन गया हूँ,
फिर नये जन्म का
एक गीत बन गया हूँ।
जिन्दगी मे है
बेशुमार गम मगर,
आज मैं दर्द का
सगीत बन गया हूँ।

अक्ल का पौधा

जब-जब कमल खिले कीचड मे
बनकर सौ जन्मो का दानी,
फिर तू बन आज 'अक्ल का पौधा'
और पौधे का पानी।

रचती है रेत

रेत उड उड कर बनाती है
हर रोज एक नया शून्य
फिर तू रेत, बीज व फूल बनकर
आज चुका जीवन का मूल्य।

यथार्थ का अमृत

मुझसे ज्यादा तो
मेरे कपड़े अच्छे है
जो तन से निकले
पसीने का अमृत पीते है।

कच्चे धागे

अच्छा है
कच्चे धागों की तरह
छिन्न-भिन्न होकर
बिखर जाये
जो सपने में
कभी बिछाई थी
दो सौ फुट लम्बी
एक दरी।

मिट्टी और मिट्टी

मिट्टी से बनी मटकी
पानी करती है ठडा
मिट्टी से बना आदमी
मारता है डडा।

खूबसूरत खयाल

इक खयाल है यारो
इतना बारीक
एक लाश टंगी है
या पहली तारीख ।

आसू और वनवासीराम

वहता-वहता
जगल-जगल
उस पावन गगा जल मे मिल जाये
मेरा आसू
मेरे भैया
वनवासीराम वन जाये।

रंग

पक्की चट्टानों से
इस कच्ची दीवार को
बहुत कुछ सीखना है
ज़िन्दगी है इक रेल की पटरी
रुक रुक कर,
देख देख कर
चलना है।

पीडा

हृदय के पिंजरे मे वन्द
पीडा,
मेरे चिन्तन का दाना
चुगती-चुगती
अव कागज के घर मे
रहने लगी है
ताकि 'कविता'
परोपकारी-पक्षी वनकर
मानव कल्याण के
सपनो मे जुटी रहे।

सोच

एक कौए ने
एक चिड़िया के
बच्चे को
अपनी चोंच से
कर दिया घायल
तो मिट्टी ने
पंख बिछा दिए ममता के
कुछ तो सोचा,
जगाये हुए सोच
और बुझाये हुए
चिराग पर ।

खामोशी

सागर के
किनारे पर
खडी एक खामोशी
सागर मे बहती
कश्ती को देखकर
चुप है
एक टीस लिये,
जरा अफसोस लिये।

दीपमाला

ब्रह्माण्ड से
काली रात ने
कुछ तारों की
दीपमाला उधार माँग ली
उन वैरागी तनहाइयों के लिए,
उन संन्यासी पर्वतों के लिए
जिनके स्वप्न का आधार
स्वयम् दर्शन है।

मेरी धरती की गगा

आकाश गगा
आँसो की गगा के
समानान्तर होकर
जब कभी धरती की
गगा के गीत गाये
तो 'हृदय-स्पर्शी कविता'
फिर एक बुलावा भेजना
इस दुनियाँ, लोग, समाज
और ब्रह्माण्ड को
ताकि वे सब आकर
मेरी धरती की गगा का
स्वागत कर सके ।

सस्कार

मेरा आसू
मेरा प्रसाद है
मेरे सस्कार का
इसलिए मैं
दिल के सागर मे
डुबकियाँ लगा रहा हूँ
शब्द चित्रो की,
मछलियाँ पकडने
मछेरा हूँ
या कवि
विश्वास नही होता
आप जो भी समझा
मैं जीवन मे—
निराश नही होता।

चिट्ठी

सवव्यापी बिम्ब की
एक चिट्ठी
प्रकृति के नाम
और मैं डाकिया
शहर से गाँव,
गाँव से शहर
देश से विदेश,
विदेश से देश
भटकता रहा
तो सहसा
एक हवा का झोंका आया
ले गया चिट्ठी उडाकर
मैं अवाक् देखता रहा ।

मैं चला अपनी नींद मे

अलकार झूमता
छन्द बोलता
आ रहा है
स्वप्न फिर मेरी नीद मे
ओ जागती नीद की
वेचैन अवस्था सुन,
जबकि एक दु ख है
हजार सुख से अच्छा
फिर तू सीख
पीडा को सहना
और इतना सु दर जीना।
अलकार झूमता
छन्द बोलता
आ रहा है
स्वप्न फिर मेरी नीद मे,
मैं चला अपनी नीद मे।

वेदना का वेग

वेदना का वेग
आसू बनकर
बह गया
न जाने कहा जाकर
ठहरेगी यह गगा
जो दिल से निकली,
आंखो से उतरी
धरा पर
या नील सरोवर मे
न जाने कहा जाकर
ठहरेगी यह गगा।

हसीन परो के साथ

छोटे-छोटे
प्यारे-प्यारे
हसीन परो से
उडती देखी है
मैंने अपनी दो आँखे ।
बच्चो करलो
मेरे क्षण-क्षण की
पल-पल की
इकट्ठी पाँखें ।
तुम्हारे गुड्डे को
गर्मी लगेगी
तो हवा देगी,
तुम्हारी गुडिया को
सर्दी लगेगी
तो दवा देगी
आपसी प्यार करा देगी ।
तब रचाना बच्चो,
गुड्डे-गुड्डी का ब्याह
और फिर रचना के
रचियता को बुलाना
म आऊगा,
छोटे-छोटे
प्यारे-प्यारे
हसीन परो के साथ ।

कागज की नाव

उडती
उडाती
उड चली है
वो कागज की नाव
जो मैंने बनाई थी
अपने मुन्ने राजा के लिए
मुना राजा
रोने लगा
हाथो से गालो को बजाने लगा
और कहने लगा
हवा ले गयी
पानी मे चलने वाली नाव वो।
तो मेरी समझ मे आया
एक तरफ
रेगिस्तान के ऊचे-नीचे टीले
जो तेज हवाओ से
बनते-बिगडते हैं।

दूसरी तरफ
वो बडे-बडे पहाड
जो ज्वालामुखी के आने से
फूट-फूट कर रो रहे हैं।
बनते, बिगडते
व फूट-फूट कर रोने की क्रिया मे
क्रिया-शील होकर
कहने लगा,
हा बेटे हा
हवा ले गयी
पानी मे चलने वाली नाव को।

उडते सूखे पत्तो के हस्ताक्षर

उडते सूखे पत्तो के हस्ताक्षर
अपनी धरती की माटी पर
चार चाद अकित करके
विधि के विधान के साथ
चार घोडो के एक रथ पर
सीधे वैकुण्ठ जा रहे ह
जाते वक्त
मेरे स्वप्न का प्रवाह भी
उनके साथ था
इसलिए मैं अब तक भूला नही
जन्म के साथ मृत्यु बोध को
और बौद्धिक पाठ को
जो कभी मैंने पढा था,
उडते सूखे पत्तो के साथ रहकर ।

दूसरी तरफ
वो बडे-बडे पहाड
जो ज्वालामुखी के आने से
फूट-फूट कर रो रहे हैं।
बनते, बिगडते
व फूट-फूट कर रोने की त्रिया मे
क्रिया-शील होकर
कहने लगा,
हा बेटे हा
हवा ले गयी
पानी मे चलने वाली नाव को।

उडते सूखे पत्तो के हस्ताक्षर

उडते सूखे पत्तो के हस्ताक्षर
अपनी धरती की माटी पर
चार चाद अकित करके
विधि के विधान के साथ
चार घोडो के एक रथ पर
सीधे वैकुण्ठ जा रहे ह
जाते वक्त
मेरे स्वप्न का प्रवाह भी
उनके साथ था
इसलिए मैं अब तक भूला नही
जन्म के साथ मृत्यु बोध को
और बौद्धिक पाठ को
जो कभी मैंने पढा था,
उडते सूखे पत्तो के साथ रहकर ।

जीवन मृत्यु का गठ-बधन

दिल के तारो की रोशनी मे
मैं धुँधली परछाइयों को
साफ देखकर
आहिस्ता-आहिस्ता
कुछ लिख रहा हूँ
एक यकीन के साथ
यह,
सब कुछ है
और कुछ भी नही ।
तो सच व झूठ का
एक साथ होने वाला जन्म
मुझे ले गया तनहाइयो मे
मैं वहा तक पहुचा
फिर आ गया
जैसे रोजमर्रा की जिन्दगी म होता है
जीवन मृत्यु का गठ-बधन ।

दद की आंच

दद की आंच से
सुलगती जिन्दगी
सोने जैसी रेत का
चन्दन लगाकर
भ्रान्तिमान अलकार की छवि बनकर
फिर 'वनवासीराम' के पीछे निकली है
'भरत-मिलाप करने
सदिया गुजर गयी,
पीढिया गुजर गयी
पर, पीडा
हीरा बनकर
मेरे भरोसे की 'भीलनी' बनी है।
राम-लक्ष्मण जानते हैं
भरत का प्यार,
प्यार की ऊचाई
और दिल से—
चाहने वालो की सच्चाई।

बर्फ से ढके पत्थर

हिमालय पर
बफ से ढके पत्थर
गा रहे हैं
अनत दु खो की
'एक सन्त कथा'
यह बात
बफ के पानी ने
एक दिन
गगा घाट पर
स्नान करने से पहले
मुझसे कही,
तो अलकार से जडी
'सुक्ति-परक रचना'
धरती की हरी हरी घास पर
दो घुटनो के बल
अठखेलिया करने लगी
सागर की लहरो की तरह,
नटखट भोले बचपन की तरह
तब मैं भूल गया
अपने चालीस साल,
अपने दु खो का विस्तृत समाज
और आशावादी बनकर जीने लगा
अपने ज म के तपोवन से तपे,
बफ से ढके
उन पत्थरो की तरह ।

दीपक

दीपक लगा रहा है
फेरी दीपक की
एक सच्चाई का
कई जन्मो से
अनुकरण करने
कर्मयोगी बनकर,
विघ्न न डाल
ओ शैतानी हस्ताक्षर !
डाली के पत्तो का रग
सूखी पत्तियो मे है।
प्रकृति की मीठी आवाजें
झरनो और नदियो मे है।
शाश्वत सत्य की
प्रक्रिया को पहचान
अब तक
झील की आख खुली है,

गगा की शान बडी है
और धरती की महक
धरती मे जडी है,
इसलिए मानव !
मत भूल
मानवता के सपने,
अपनत्व की भावना
जो अकित है
बिम्ब-बिम्बित प्रकाश की भाँति
'दीपक' और 'दीपक' मे ।

रगा हुआ मन

कलम से करके वादे निभाये है मैंने,
मदारी बनकर जादू जगाये है मैंने ।

मोर मुकुट

प्रकट हो गया
मेरा क‍न्हाई
प्रकृति गाने लगी
शाश्वत सत्य की प्रक्रिया
और मोर बनाने लगे
'मोर मुकुट'
तो आत्मा व मन की दूरिया
नजदीकियो मे परिवर्तित हो गइ ।

नींद करेगी स्वागतम

वृंदावन से चलकर आया
मेरा 'कान्हा'
मेरे लिए
नगे पाँव
मेरे घर की
कडी खटखटाने,
मालूम था
वो आयेगा
नीद करेगी
स्वागतम् ।
यही हुआ
मन ही मन
'कान्हा' हसा
मोहिनी हसी थी
मन-मोहन
बाल-गोपाल
मुझसे दो लड्डू खाकर

मेरे गत-विगत सपनो मे
विचरण करते हुए
लुप्त हो गये
और मैं कान्हा,
मेरा सखा
पुकारने लगा
तो परहित
पर-पीडा का दशन वन गया ।
'ऐसे भी जीवन
विम्ब-बिम्वित प्रकाश की
राम माला है व
भजन माला है' ।

आसू और आचल

मरी मा हर राज राधा कृष्ण की पूजा किया करती है
और चांदी की प्याली म मिश्री का भोग लगाया करती है
जबकि मैं ठहरा नास्तिक। एक दिन मैं या मेरी आत्मा
चादी की प्याली व राधा कृष्ण की मूर्ति

भोग की प्याली मे
आसू टपके है
राधा बोली—प्रिय !
मेरे आचल मे डाला
नारी कब दु खो से हारी हे
तेरे भक्त की बात—
कितनी प्यारी है।

मन स्थितियाँ

एक रूप का
रूपान्तर
एक स्वप्न बुन रहा है
जिसकी बुनियाद
'राधा' भी है
और 'मीरा' भी,
फिर 'भोले शकर' जैसी
भोली आत्मा
कैसे करे
छल-कपट
जबकि भ्रान्तिमान अलकार से
अकित है,
मन स्थितियाँ ।

पाचवाँ जन्म

तीन जन्म याद है
चौथा जन्म साथ है
उम्र के चालीस साल
न खीच तू खाल
अच्छे बुरे ह कम,
अच्छे बुरे ह धम
मृत्यु है जीवन का पूणविराम
करने दे, दो घडी विश्राम
फिर लेने चलूगा
पाचवाँ जन्म ।

लड्डू और प्यार

लेकर चला गया
उसके लिए लड्डू
आकाश मडल मे
वजने लगे टकारे
और देवताओ मे
मच गयी हल-चल
कौन आया !
देवदूत बोले,
एक वाप आया है
अपने इकलौते वेटे को देने लड्डू
तो देवता खुद वन गये वच्चे
मुझे दो लड्डू—
मुझे दो लड्डू ।

सघर्ष

आसूओ के
वतासो का
भोग लगाकर
हृदय स्पर्शी शब्दो से
भावा-वेग मे
कुछ कहदू
तो बुरा न मानना
मेरे माली,
एक दु ख ने सिखाया है
जीने का अथ
सघप करना है मुझे
रेत की चादर पर
तारे टाकने है मुझे,
आग के धुएँ पर
यादे टागनी है मुझे
वर्षा की बूदो मे
रग भरने है मुझे,
दिल के तारो से
रस्सी झूलनी है मुझे
एक दु ख ने सिखाया है
जीने का अर्थ
सघप करना है मुझे ।

स्वप्न की तीथ-यात्रा

वृन्दावन की कुञ्ज-गलिया
कभी कान्हा की बातें
मत्य का प्रसाद देकर
लुक-छिपनी खेलती है
मुझसे
'मैं उसके खेल की,
घोडागाडी हूँ
और वह कोचवान ।'
सफर शुरू हुआ
'राधा'
फिर एक नयी 'मीरा' के रूप मे बोली,
ओ घोडागाडी वाले
साथ मुझे भी ले चलो
तो सार्थक हुई,
मेरे स्वप्न की तीथ-यात्रा ।

दिल की गहराइयो का साँवरा

डूबता गया
दिल की गहराइयो मे
तो खून और पानी के
पहरेदारो ने कहा,
ठहरो—
मैंने पूछा,
क्या गुस्ताखी है मेरी ?
कुछ अधेरो के उजियालो से
दिल रूपी कन्हाई को
नापने आया हूँ
जन्म जात दर्जी हूँ
मानवता की कमीज बनाने आया हूँ।
मुझे न रोको
कुदरत का चलन मिट जाएगा
चाँद, तारे व सूय की
योग साधना का सौदय घट जाएगा।
मेरा साँवरा—
बिन-कपडो के रह जायेगा।

परहित की भावना

स्वप्न मे
चार महात्मा
और दो फकीर
लेकर आये
पास मेरे
परहित की भावना
मैं बोला,
कामना
करो स्वागतम्
जबकि रूप रूपान्तर मे है
कोई कन्हाई, अल्लाह, ईसा और राम
जो भारतीय दशन का परिचायक है।
इसलिए ओ कवि !
बन जा चातक
और बैठ जा कल्पना की डाल पर
एक सकल्प का

विचरण है,
दशन है।
मच पूर्णमासी का चांद,
अमावास्या का ग्रहण
अन्त अनत काल का
काल-चरण।
जिसे गाती
पुरातन सस्कृतियां
इतिहास
तू भी गा
गाता जा,
धरा पर
तोपधारी मानव वानर।

अलकार

आरती, सकेत और प्रभूलीला
बन गया दर्शन जीवन का
नया जन्म हुआ
नवीनता बन गई
नव-दृष्टि
जो खोया था
वो पा लिया
'आनन्दित गौतम' बनकर
धरा की धरोहर को जान लिया ।
साथ थी गगा युमना की
पावन शीतल लहरें,
कल-कल करते झरने
और महकती माटी का
महकता आदर्श ।
सब कुछ अद्भुत था
शरीर भी आधा नर
आधी नारी से युक्त था
जैसे 'रूप' का 'रूपक'
'रूप' मे ढलकर
अलकार बन गया हो ।

दु ख रगते हैं मन को

आखो के पानी से धोये
कोई यशोदा मैया का आँगन
इस विश्वास के साथ कि—
'गोपाल खेलेंगे'
गोपाल आये
और खेले
तो मेरा दद,
धरातल से उठकर
आकाश की ओर
सारे ब्रह्माण्ड को
यह कहने चला गया,
मेरे आखो के पानी से
धोये हुए आगन पर
गोपाल बार-बार आयेंग
और खेलेंगे।



नवल बीकानेरी

ज म तिथि मिगसर वदी 8 (अष्टमी) स 2005

ज म स्थान बीकानेर (राजस्थान)

लेखन शुरू किया 1962 ई मे

नवनीत,

मधुमती,

प्रकर,

उवशी,

युग प्रस्थ भारती,

राजस्थान पत्रिका,

गणराज्य,

पथ-जागरण,

आज का भारत

तथा अ य पत्र-पत्रिकाओ एव

समाचार पत्रो म प्रकाशित

व आकाशवाणी

बीकानेर से प्रसारित

साहित्य के क्षेत्र म योगदान

1984/पहली कृति

'कागज का घर'

सम्पक

नवल बीकानेरी

'नवीन कुटीर'

रानी बाजार, बीकानेर।